ISSN - 2455-6696

अनुसंधान शताब्दी

अर्द्धवार्षिक आंतरराष्ट्रीय हिंदी ई-शोध पत्रिका

जनवरी से जुन 2019

प्रधान संपादक - डॉ.बळीराम सख

संपादक - डॉ.राजश्री तावरे

'अनुसंधान शताब्दी' आंतरराष्ट्रीय हिंदी ई-शोध पत्रिका

जनवरी से जुन 2019 Issue - V, vol- I

ISSN : 2455-6696

अनुक्रमणिका

1.	डॉ.ललिता राठोड	इक्कीसवीं शती के प्रथम दशक के महिला कथा साहित्य में अभिव्यक्त स्त्री विमर्श	05-07
2.	करपे ए.एस	इक्कीसवीं सदी की महिला लेखिकाओं के उपन्यास	08-15
3.	डॉ.राजश्री मस्के	संत रैदास के काव्य में प्रगतिशील चेतना	16-19
4.	वरुणराज तौर	हिंदी साहित्य में नारी	20-23
5.	प्रा.उज्वला गाडे	नरेश मेहता कृत उत्सवा के विविध रंग	24-26

Anusandhan Shatabdi

'अनुसंधान शताब्दी' आंतरराष्ट्रीय हिंदी ई-शोध पत्रिका
जनवरी से जुन 2019 Issue - V, vol- I
ISSN : 2455-6696

इक्कीसवीं शती के प्रथम दशक के महिला कथा साहित्य में अभिव्यक्त स्त्री विमर्श

डॉ.ललिता राठोड

इक्कीसवीं शती के प्रथम दशक का महिला कथा–साहित्य अनेक दृष्टियों से अपने पूर्ववर्ती काल से अलग है। सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक एवं आर्थिक दृष्टि से काल उथल–पुथल का होने के कारण इस काल में महिला कथा–साहित्य में अनेक नवीन प्रवृत्तियाँ दिखाई देती हैं। अनेक देशों से बढते हुए संपर्क के कारण भारतीय परिवेश में पारिवारिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में बहुत अधिक परिवर्तन आया है। बेरोजगारी, बेकारी, महँगाई आदि के कारण आम आदमी की जिन्दगी अर्थहीन होती जा रही हैं। नारी का शिक्षित होना एवं समाज के अनेक क्षेत्रों में उसका प्रवेश करना यह घटना भी इन कालों की अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। इस बदले हुए परिवेश के कारण ही इक्कीसवीं शती के प्रथम दशक के महिला कथा–साहित्य में लीक से हटकर लिखा हुआ कथा–साहित्य दिखाई देता है। इस कारण प्रथम दशक का महिला कथा–साहित्य अनेक दृष्टियों से बदलाव का कथा–साहित्य सिध्द होता है। इस कथा–साहित्य पर उत्तर–आधुनिकता का प्रभाव दिखाई देता है। उत्तर आधुनिकता यह विचारधारा संपूर्णता के बदले अपूर्णता एवं परिवर्तन को स्वीकार करती है। प्रथम दशक में परिवर्तित मुल्य एवं व्यवस्था को ध्यान में रखकर प्रभावी कथा–साहित्य लिखने का कार्य महिला लेखिकाओं ने किया है। इस काल में नर–नारी के सम्बधों में एक बिखराव सा आया है। इसका भी मर्मस्पर्शी चित्रण महिला कथा–साहित्य में दिखाई देता है।

Anusandhan Shatabdi

इक्कीसवीं शती के प्रथम दशक का महिला कथा–साहित्य अपने पूर्ववर्ती महिला लेखन की तरह आंसुओं, दीनताओं और वेदनाओं को अलापनेवाला साहित्य नहीं है। इस लेखन में स्त्री–संघर्ष, स्त्री विमर्श के साथ ही साथ महिला जागरण का भी परिचय मिलता है। इतना ही नहीं इस लेखन में समसामयिक और सामाजिक चेतना का प्रबुध्द रुप मिलता है। समकालिन जीवन का यथार्थ रुप इसमें प्रकट हुआ है। इस कारण प्रथम दशक का महिला कथा लेखन अनेक दृष्टियों से सुखद प्रतित होता है।

नया सहस्त्रक वैश्वीकरण, बाजारीकरण एवं तकनीकी के आविष्कारों का जान पड़ता है। इस सहस्त्रक के प्रथम दशक में अविष्कारों के साथ कई समस्याएं भी उभरी है। इन्ही समस्याओं ने साहित्यकारों को साहित्य के प्रचलित आशय